

परवाज़: एक सांस्कृतिक संध्या

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, लखनऊ सैटेलाइट कैम्पस में दिनांक 16 अक्टूबर 2025, गुरुवार को एक जीवंत सांस्कृतिक संध्या "परवाज़" का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा की सुंदर प्रस्तुति देखने को मिली। इस कार्यक्रम में मूक अभिनय, युगल गीत, समूह गीत, नाटक, और एकांकी सहित विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियाँ शामिल थीं, जो छात्रों की रचनात्मकता और कौशल का प्रतीक बनीं।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रभावशाली संचालिका **उज़्मा फरहत** (पीएच.डी., अंग्रेज़ी) द्वारा किए गए गर्मजोशी से स्वागत के साथ हुई।

प्रारंभिक प्रस्तुति, एक माइम (मूक अभिनय), जिसे **पी. खाजा मोईनुद्दीन** (पीएच.डी., अंग्रेज़ी) और **अब्दुर रहमान** (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) ने प्रस्तुत किया, जीवन चक्र का प्रभावशाली चित्रण था, जिसने संध्या के लिए मंच तैयार कर दिया। इसके बाद **अरीबा** (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर) और **बादे सबा** (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) द्वारा प्रस्तुत भावपूर्ण युगल गीत "**खैरियत पूछो**" ने अपनी सुरीली आवाज़ और भावनात्मक गहराई से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

"**ओ देश मेरे**" नामक जोश से भरा समूह गीत **बादे सबा और उनकी टीम** (**शमैला, नदा, बरीरा**) द्वारा प्रस्तुत किया गया, जो राष्ट्र को समर्पित एक भावनात्मक श्रद्धांजलि थी। इस प्रस्तुति ने दर्शकों में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना का संचार किया।

"**मीडियाँक्रेसी**" शीर्षक से प्रस्तुत प्रहसन नाटक, जिसमें **बुशरा, साकिब, मोहम्मद सामी, अबुल आस, मोहम्मद इरफान और आदिल** ने भाग लिया, ने सोशल मीडिया और सामाजिक मान्यताओं पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज की सच्चाई को उजागर करने में सफल रही।

संध्या का समापन "**महफ़िल-ए-समा**" के साथ हुआ, जिसमें **सादिया, मारिया, अशरफ़, साकिब और अरीबा** ने "**छाप तिलक सब छीनी रे**" की आत्मीय प्रस्तुति

देकर दर्शकों को पूरी तरह सम्मोहित कर लिया। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक विविधता और कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्सव रहा।

शाम की प्रधान प्रस्तुति एकांकी नाटक "चीफ़ की दावत" रही, जो भीष्म साहनी के साहित्यिक रचना पर आधारित थी। यह प्रस्तुति विद्यार्थियों की अभिनय प्रतिभा और मंच पर कहानी को जीवंत करने की क्षमता का प्रमाण थी। इस नाटक के माध्यम से सामाजिक टिप्पणी और आलोचना को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन प्रोफेसर हुमा याकूब, कैम्पस इंचार्ज के मार्गदर्शन में हुआ। आयोजन समिति में डॉ. अदनान बिस्मिल्लाह (समन्वयक), डॉ. नूर फातिमा (संयोजक), डॉ. रियाज़ अहमद गनई (सह-संयोजक), डॉ. फिरदौस हमीद पारे और डॉ. अमीना अमरीन शामिल थे। समिति की निष्ठा और अथक परिश्रम से यह कार्यक्रम भव्य सफलता में परिवर्तित हुआ।

प्रो. हुमा याकूब ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों की शानदार भागीदारी की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सहयोग की भावना को विकसित करने में अत्यंत सहायक होते हैं। साथ ही उन्होंने आयोजन समिति के अद्भुत प्रयासों की भी प्रशंसा की।

कुल मिलाकर, यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की उस प्रतिबद्धता का प्रतीक रहा, जो अकादमिक और सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों दोनों को बढ़ावा देते हुए एक समग्र शिक्षण वातावरण प्रदान करने की दिशा में कार्यरत है।